Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 9 | SEPTEMBER 2024

आधुनिक अर्थशास्त्री डॉ.अमर्त्य सेन का आर्थिक योगदान

श्री भगत तिगोया [1]

[1] **यूजीसी नेट अर्थशास्त्र.**

ABSTRACT:

डॉ. अमर्त्य सेन एक महान अर्थशास्त्री रहे हैं जितने महान वह अर्थशास्त्री जाने जाते हैं उतने ही महान वह दार्शनिक भी हैं अमृत्य सेन एक विश्व प्रसिद्ध मानवतावादी तर्कवादी भारतीय अर्थशास्त्री है जो सभी भारतीयों के लिए गर्व का विषय है। उनका कल्याणकारी अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय तथा विकासात्मक अर्थशास्त्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अमर्त्य सेन को कई सारी आर्थिक सिद्धांतों के जनक के रूप में जाना जाता है, विशेषता कल्याणकारी अर्थशास्त्र, गरीबी सूचकांक तथा कल्याण से संबंधित धारणाओं से संबंधित सिद्धांतों के संदर्भ में उनका योगदान अतुल्य रहा है। अर्थशास्त्र में विशेष रूप से कल्याणकारी अर्थशास्त्र में बुनियादी समस्याओं के समाधान खोजने के लिए उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है इसी कारण उन्हें कल्याणकारी अर्थशास्त्र के जनक के रूप में जाना जाता है। उनके अतुल्य आर्थिक शोध के कारण वर्ष 1998 के लिए अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया यह उनकी महानतम उपलब्धि थी। उनके अतुल्य कार्य तथा आर्थिक योगदान के लिए उन्हें 1999 में भारत रत्न से नवाजा गया था। नोबेल दृष्टिकोण के अनुसार उनकी [अ] सामाजिक चयन सिद्धांत(social choice theory)में सेन का योगदान, [ब] विकास अर्थशास्त्र में सेन का कार्य मुख्य रूप से गरीबी तथा अकाल के बीच संबंध के विश्लेषण , [स]सेन का अधिकार और सामर्थ्य (Entitlement and capability) की धारणाएं प्रमुख है। इस लेख की सहायता से हम एक संक्षिप्त रूप से उनके कल्याणकारी अर्थशास्त्र में आर्थिक योगदान का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे जो भारतीय पृष्ठभूमि से आर्थिक तथा सामाजिक रूप से उनके कार्यों का अध्ययन करता है।

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th September 2024	30th September 2024

प्रस्तावना

सामान्य जीवन परिचय

अमर्त्य सेन का जन्म 3 नवंबर 1933 को शांति निकेतन कोलकाता पश्चिम बंगाल में हुआ था लेकिन उनका पेत्रक घर ढाका वर्तमान बांग्लादेश की राजधानी में रामना विश्वविद्यालय के पास था। उनका परिवार सुसंस्कृत तथा शिक्षित था,वह काफी सुसंस्कृत तथा रचनात्मक वातावरण में पले बडे ,उनके पिता आशुतोष सेन विज्ञान के क्षेत्र में काम करते थे वह ढाका यूनिवर्सिटी में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर थे जबकि उनकी माता अमिता सेन जो शांतिनिकेतन में रविंद्र नाथ टैगोर के विश्व भारती की छात्रा रही तथा वह बंगाल की एक अच्छी पत्रिका की संपादक रही थी।

अमर्त्य सेन की शिक्षा तथा करियर

अमर्त्य सेन की प्रारंभिक शिक्षा शांतिनिकेतन में हुई थी और बाद में उन्होंने विश्व भारती में इंटर स्तरीय पढ़ाई की ।1953 में उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज कोलकाता से अर्थशास्त्र में बी.ए की उपाधि प्राप्त की और फिर वह उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए थे जहां उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। 23 की उम्र में सेन जादवपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए 1955-58 में उन्होंने जादवपुर में ,1963-71 में दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में, 1971-77 में इंग्लैंड स्कूल आफ इकोनॉमिक्स और 1977-88 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाया। 1988-98 के दौरान अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय में उन्होंने अर्थशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र पढाया। 1998-2004 में उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज के 'मास्टर' के रूप में नियुक्त किया गया यह उपाधि हासिल करने वाली वह प्रथम भारतीय थे ।1996 में अमर्त्य सेन को अमेरिकन इकोनॉमिक्स संगठन का अध्यक्ष चुना गया अमर्त्य सेन को विश्व विख्यात मानवतावादी तर्क वादी भारतीय अर्थशास्त्री के रूप में जाना जाता है।

अमर्त्य सेन की प्रमुख कृतियाँ

भारत के महान अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने मनुष्य के जन कल्याण के लिए लोकतंत्र, स्त्री-पुरुष असमानता, गरीबी और सामाजिक मुद्दों जैसे गंभीर विषयों पर कई पुस्तकें लिखी हैं। यहाँ अमर्त्य सेन का जीवन परिचय के साथ ही उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकों के बारे में बताया गया है, जो कि इस प्रकार हैं:-

	किताब	प्रकाशन वर्ष
i.	कलेक्टिव चॉइस एंड सोशल वेलफेयर	वर्ष 1970
ii.	ऑन इकोनोमिक इनइक्वालिटी	वर्ष 1973
iii.	गरीबी और अकाल	वर्ष 1981
iv.	चॉइस, वेलफेयर एंड मेज़रमेंट	वर्ष 1982
v.	कोमोडिटीज़ एंड केपेबिलिटीज़	वर्ष 1985
vi.	ऑन एथिक्स एंड इकोनोमिक्स	वर्ष 1987
vii.	हंगर एंड पब्लिक एक्शन	वर्ष 1989
viii.	डेवलपमेंट एस फ्रीडम	वर्ष 1999
ix.	आर्थिक विकास और स्वतंत्रता	वर्ष 2001
x.	रैशनैलिटी एंड फ्रीडम	वर्ष 2002
xi.	द आर्गयुमेंटेटिव इंडियन	वर्ष 2005
xii.	आइडेंटिटी एंड वायलेन्स	वर्ष 2006
xiii.	पावर्टी एंड इनक्वॉलिटी	वर्ष 2006
xiv.	द आईडिया ऑफ़ जस्टिस	वर्ष 2009
xv.	द कंट्री ऑफ फर्स्ट बॉयज़	वर्ष 2015
xvi.	भारत और उसके विरोधाभास	वर्ष 2018

अमर्त्य सेन का आर्थिक योगदान

अमर्त्य सेन एक महान अर्थशास्त्री हैं उन्होंने अर्थशास्त्र में कल्याणकारी अर्थशास्त्र और

सामाजिक विकल्प सिद्धांत पर अहम योगदान दिया। उनके कार्य से कई नैतिक आयाम को अर्थशास्त्र में पुनः शामिल किया गया ,उन्होंने कल्याणकारी अर्थशास्त्र की मूलभूत समस्याओं पर अध्ययन किया तथा गरीबी तथा अकाल के पीछे के आर्थिक तंत्र को समझने का कार्य किया। उनके आर्थिक योगदान को हम निम्न बिंदुओं की सहायता से समझ सकते हैं:-

1.असमानता का अर्थशास्त्र :-

प्रोफेसर अमर्त्य सेन के आर्थिक असमानता के आयामों के विश्लेषण ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है-आर्थिक असमानता की अवधारणा को समझना व हल प्रस्तुत करना। 1973 में आर्थिक असमानता पर अपनी पुस्तक में सेन ने पहले के सिद्धांतों की सीमाओं को उजागर किया जिसने असमानता की अवधारणा को आय और परिसंपत्ति वितरण के बराबर बताया। अपने व्याख्यान में 1980 में 'किसकी समानता?' विषय पर मानव मूल्यों पर एक गहन नैतिक विश्लेषण प्रस्तुत किया ,समानता के विचार के बारे में सेन ने कहा कि हालांकि अर्थशास्त्री इस बात पर सहमत हैं कि समानता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। वांछनीय उद्देश्य के लिए, वे आर्थिक समानता के विभिन्न संकेतकों पर जोर देते रहे हैं। जॉन रॉल्स ने अपनी पुस्तक द थ्योरी ऑफ जस्टिस (1971) और अपने लेख 'रिप्लाई टू सेन' (1988) में प्राथमिक वस्तुओं या आवश्यक वस्तुओं के वितरण में समानता की आवश्यकता पर बल दिया गया, रोनाल्ड ड्वॉर्किन की पुस्तक टेकिंग राइट्स सीरियसली (1981) में संसाधनों की 'समानता' और 'असमानता' पर जोर दिया गया है। इस क्षेत्र में अन्य कार्यों ने कुछ अन्य फोकल चर पर ध्यान केंद्रित किया। एटकिन्सन [(1975), (1983)]अर्थव्यवस्था को ऐसी स्थिति में ले जाने की आवश्यकता पर बल दिया जहां अधिकतम लाभ सुनिश्चित हो सके। हाल ही में, एक एकीकृत संकेतक विकसित करने के प्रयास किए गए हैं मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) का निर्माण करके समानता सुनिश्चित करना ताकि सापेक्षिक प्रगति का आकलन किया जा सके सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में विभिन्न देशों द्वारा अतिरिक्त आयामों को कवर करने के लिए, 1991 में मानव स्वतंत्रता सूचकांक (एचएफआई) के निर्माण का प्रयास किया गया है? चार्ल्स ह्यूमैना ने राजनीतिक अस्थिरता को एक अतिरिक्त पैरामीटर के रूप में शामिल किया। सेन ने अपने लेख में असमानता पुनर्परीक्षण (1992) ने इस बात पर जोर दिया कि असमानता की चर्चाएं इससे प्रभावित होती हैं एक फोकल चर का चयन। सेन के अनुसार, उचित उपाय जीवन की गुणवत्ता का एक प्रकार होगा मानव विकास सूचकांक जैसे उपाय, जो वास्तविक स्थितियों से संबंधित हैं इससे जांच का दायरा काफी बढ़ गया है और एक निष्कर्ष तैयार करने में मदद मिली है । सार्थक विकास रणनीति. सेन ने अत्यधिक असमानता और अन्याय के एक अन्य आयाम पर जोर दिया है घर और समाज में लैंगिक पूर्वाग्रह की अवधारणा। महिला वंचना से संबंधित मुद्दों में उनकी रुचि शुरू हुई। सेन के लिए यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि "लैंगिक असमानता और महिला वंचना के असाधारण उच्च स्तर का बने रहना, इनमें से एक है। उनके अनुसार यह भारत की सबसे गंभीर सामाजिक विफलताएँ" है।

2. अकाल (सुखा) और निर्धनता

Poverty and famines में सेन का एक निबंध **entitlement and deprivation1981** सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की रचना है ,निबंध में उन्होंने अनेक अकालों का अध्ययन मौलिक रूप से सिद्धांतिक ढांचे के कार्यक्रम में किया उसने निर्धनता को अनेक अर्थ में परीक्षण किया और निरपेक्ष एवं सापेक्ष वंचन के भार की ओर ध्यान आकर्षित किया। सेन ने अपने अध्ययन में विश्लेषण किया है कि एक सामूहिक निर्णय विभिन्न व्यक्तियों के कल्याण को कैसे प्रभावित करता है चयन ने अनुभवजन्य अध्ययनों के आधार पर वास्तविक स्थिति पर सिद्धांत एक दृष्टिकोण लागू करके बताया है कि सूखे की स्थिति में आर्थिक प्रणाली कैसे काम करती है, क्या समाज में व्यक्ति उपलब्ध विकल्पों पर जो मूल्य रखते हैं वे समग्र रूप से समाज के मूल्यों को निर्धारित करने में काम आते हैं। सुखे और निर्धनता के बीच संबंध पर शोध करते हुए उन्होंने बताया कि भूखमरी की समस्या का मुख्य कारण खाद्यान्न की कमी नहीं बल्कि असमान वितरण प्रणाली है अमर्त्य सेन का मानना था कि शहरों में उत्पन्न आर्थिक उतार चढ़ाव उसके परिणाम स्वरुप खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि से सुखे की स्थिति पैदा हो सकती है इसके समाधान के रूप में खाद्य उत्पादन या आपूर्ति पर सरकारी नीतियों में कुछ बदलाव करके न्यूनतम प्रयासों से भूख और कुपोषण जैसे मुख्य समस्याओं से देश को बचाया जा सकता है। अकाल के ऊपर उनके विचार काफी प्रत्यक्ष प्रभावित थे अपने बचपन में उन्होंने अकाल को प्रत्यक्ष रूप से देखा था जो उनके बालमन पर प्रभाव कर गया 1943 के इस सूखे के दौरान लाखों लोग भूख से मर गए भूमिहीन मजदूर किसान आदि ने सूखे का प्रभाव झेला देश में खाद्यान्न की कीमत में वृद्धि के कारण मजदूर व निर्धन वर्ग के लोग अनाज खरीदने में असमर्थ होने से मर रहे थे सेन की जानकारी के आधार पर अपने अध्ययन में आगे कहा कि बंगाल में खाद्यान्न की कमी के कारण खाद्यान्न की कीमतें नहीं बढी बल्कि दो मुख्य कारण जो सेन ने बताएं 1.सरकार द्वारा मुद्रास्फीति के कारण कीमत में तीव्र वृद्दि निर्धनों पर बुरा प्रभाव डालती है 2.खाद्यान्न की जमाखोरी के कारण खाद्यान्न महंगा हो जाता है इससे लोगों के लिए इसे खरीदना असंभव हो जाता है और भुखमरी की स्थिति पैदा हो जाती है। अपने अध्ययन के माध्यम से पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक संदेश दिया है कि गरीबों को खाद्यान्न खरीदने में सक्षम बनाने की सुविधा प्रदान की जाए। अनुभवजन्य रूप से, सेन ने दिखाया कि 1943 में खाद्य उत्पादन प्रति व्यक्ति के हिसाब से भी 1941 की तुलना में अधिक था। 1973 के इथियोपियाई अकाल और 1973 के बांग्लादेश अकाल के लिए इसी तरह के अभ्यास से पता चला कि अकाल खाद्य उपलब्धता में भारी गिरावट के बिना भी हो सकते हैं और यहां तक कि समग्र तेजी की स्थिति में भी हो सकते हैं । सेन ने जोर देकर कहा कि अकाल बाजार की विफलताओं या पात्रता की विफलताओं का परिणाम थे और बाजार तंत्र में अक्षमताओं को ठीक करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। नोबेल समिति ने सही रूप से अकाल के तंत्र पर उनके विश्लेषण की सराहना की जो अकाल के अनुभावीक कारण के एक अपेक्षाकृत विरोध के अपने आप में महत्वपूर्ण है नोबेल समिति का आधुनिक काल के एक अग्रणी अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्री के रूप में सेन का चयन अच्छा है जिसने विश्व के विभिन्न भागों में अकाल और भुखमरी का अध्ययन किया इसका नियमित सुनिश्चित खाद्य अधिकार और स्फीति से बचाव के लिए आग्रह अवश्य ही सभी गरीब देश में स्वीकार किया जाएगा।

3. गरीबी और गरीबी सूचकांक

प्रो. अमर्त्य सेन ने गरीबी और अकाल के अध्ययन में जो योगदान दिया, वह समाज के गरीब वर्गों के प्रति उनकी चिंता का परिणाम था। गरीबी पर रेन (1971) के दृष्टिकोण को इसके विपरीत रखा जा सकता है: "लोगों को इतना गरीब नहीं बनने देना चाहिए कि वे समाज को अपमानित या नुकसान पहुँचाएँ। यह गरीबों की दुर्दशा नहीं है, बल्कि समुदाय के लिए असुविधा और लागत है जो गरीबी के इस दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण है"। उन्होंने इस दृष्टिकोण पर आपत्ति जताई कि गरीबी गैर-गरीबों के लिए असुविधाजनक है, जो मनुष्य को 'साधन' के रूप में देखता है, न कि 'साध्य' के रूप में। इस प्रकार सेन पूछते हैं कि हमारी चिंता का केंद्र कौन होना चाहिए? सेन का तर्क है कि गरीबी में बाहरी प्रभाव हो सकते हैं, लेकिन वे गरीबी उन्मूलन का मूल केंद्र नहीं हैं। गरीबी एक नैतिक मुद्दा है, और गरीबों की क्षमताएँ और कामकाज गरीबी से संबंधित प्रमुख चिंताएँ हैं। उन्होंने गरीबी के उचित माप की आवश्यकता पर भी बल दिया है, क्योंकि जनसंख्या अनुपात और आय अंतर माप दोनों ही कुछ सीमाओं से ग्रस्त हैं। यदि गरीबी रेखा से ठीक नीचे के लोगों को राज्य द्वारा गरीबी से बाहर निकालने में मदद की जाती है, तो हेड काउंट अनुपात भ्रामक संकेत देगा। दूसरी ओर, अकेले आय अंतर गरीबों की संख्या का कोई संकेत नहीं देगा। इन सीमाओं को दूर करने के लिए, सेन ने गरीबी का एक उपाय प्रदान किया –

P=H [I + (1 – I) G]

जहाँ P=सेन का गरीबी सूचकांक

H=हेड काउंट अनुपात

I=गरीबी अंतर अनुपात

G=गरीबों की आय के वितरण का गिनी-गुणांक

सेन ने दिखाया कि P कई वांछनीय गुणों को संतुष्ट करता है: यह एक गरीब व्यक्ति की आय में गिरावट के प्रति संवेदनशील है और यह गैर-गरीबों की आय में वृद्धि के प्रति असंवेदनशील है; और यह तब बढ़ता है जब आय गरीबों से गैर-गरीबों को हस्तांतरित होती है। गरीबी माप में सेन के काम ने इस क्षेत्र में अनुसंधान की होड़ लगा दी, और सेन के विचारों के बाद नए उपाय विकसित किए गए। इन उपायों में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला Foster-Greer-Thorbecke सूचकांक लगता है। गरीबी और वितरण का विश्लेषण करते समय सेन ने अपना ध्यान भुखमरी पर केन्द्रित किया। इससे विकासशील देशों में अकाल पर उनके शोध को बढ़ावा मिला। अकाल के प्रति पारंपरिक दृष्टिकोण ने इस घटना को एक विशेष क्षेत्र में खाद्य आपूर्ति में तीव्र कमी के रूप में समझाया है जिसके परिणामस्वरूप भूख, भुखमरी और मृत्यु होती है। सेन ने इस पारंपरिक ज्ञान को चुनौती देते हुए कहा कि भुखमरी एक ऐसी स्थिति है जब कुछ लोगों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं होता है, जिसका अर्थ जरूरी नहीं कि भोजन की कमी हो। 1943 के महान बंगाल

अकाल का विश्लेषण करते हुए, सेन ने अकाल जांच आयोग के इस दावे का खंडन किया कि अकाल का प्राथमिक कारण खाद्य आपूर्ति में गंभीर कमी थी।

4. सेन की सामर्थ्य धारणा (The Concept of Capability)

सेन द्वारा विकसित की धारणा वस्तुओं या उपयोगिता की अपेक्षा कल्याण की अच्छी सूचक है सैन ने बताया कि समर्थ कल्याण की प्राप्ति के लिए प्राथमिक वस्तुओं के रूपांतरण की योग्यता है मानव जाति की सामर्थ्य समाज में भिन्न क्षमताओं में क्रियाकलाप की उसकी योग्यताएं हैं जिससे वह अपने कल्याण के घटकों की प्राप्ति में समर्थ हो सकता है इस प्रकार की कार्यकारी योग्यता में पर्याप्त और पोषक भोजन निहित है। सेन का तर्क है कि कल्याण का मूल्यांकन करते समय सबसे महत्वपूर्ण बात यह विचार करना है कि लोग वास्तव में क्या करने और बनने में सक्षम हैं। लोगों के पास जो वस्तुएं या धन है या उनकी मानसिक प्रतिक्रियाएँ (उपयोगिता) एक अनुचित फ़ोकस हैं क्योंकि वे केवल सीमित या अप्रत्यक्ष जानकारी प्रदान करते हैं कि जीवन कितना अच्छा चल रहा है। क्षमता दृष्टिकोण सीधे जीवन की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करता है जिसे व्यक्ति वास्तव में प्राप्त करने में सक्षम हैं। जीवन की इस गुणवत्ता का विश्लेषण 'कार्यप्रणाली' और 'क्षमता' की मूल अवधारणाओं के संदर्भ में किया जाता है। कोई भी क्रियाकलाप 'होने और करने' की अवस्थाएँ हैं जैसे कि अच्छी तरह से पोषित होना, आश्रय होना। उन्हें उन्हें प्राप्त करने के लिए नियोजित वस्तुओं से अलग किया जाना चाहिए।क्षमता मूल्यवान कामकाज के सेट को संदर्भित करती है, जिस तक एक व्यक्ति की प्रभावी पहुँच होती है। इस प्रकार, एक व्यक्ति की क्षमता विभिन्न प्रकार के जीवन के बीच – विभिन्न प्रकार के कामकाज के संयोजनों के बीच चयन करने के लिए एक व्यक्ति की प्रभावी स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व करती है – जिसे वह महत्व देता है। (बाद के काम में, सेन एकल क्षमता सेट के बजाय बहुवचन (या यहां तक कि 'स्वतंत्रता') में 'क्षमताओं' को संदर्भित करता है, और यह व्यापक क्षमता साहित्य में भी आम है। यह विश्लेषण को जीवन के विशेष पहलुओं से संबंधित कामकाज के सेट पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है, उदाहरण के लिए, साक्षरता, स्वास्थ्य या राजनीतिक स्वतंत्रता की क्षमताएँ।)

5.सेन की अधिकार की धारणा(The concept of Entitlement)

अमृत्य सेन अधिकार की धारणा में पोषक भोजन, चिकित्साऔर स्वास्थ्य ,रोजगार, अकाल के समय में खाद्य आपूर्ति की सुरक्षा आदि को सम्मिलित करता है वह अधिकार की प्रणाली को स्थापित करने की असफलता को अकाल उत्पन्न होने का कारण मानता है । उसने माना की मार्केट सभी लोगों को अधिकार प्रदान कर सकता है यदि उनको कार्य और उचित मजदूरी प्राप्त हो सके ,कुछ समर्थ सुधारो की चीजों के परिप्रेक्ष्य में मार्केट अधिकार प्रदान नहीं कर सकेगा सेन जोर देकर कहा कि बाजार का विस्तार ऐसे उपकरणों में से है जो मानव सामर्थ्य को बढ़ावा देने में सहायता कर सकता है और स्थानीय वचन की तीव्र गति से दूर करने के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता ही प्रदान कर सकता है अमर्त्य सेन का अधिकार दृष्टिकोण एक सिद्धांत है जो विश्लेषण करता है कि लोगों की भोजन तक पहुँच कैसे निर्धारित होती है और अकाल कैसे पड़ते हैं। सेन का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि किसी व्यक्ति का अधिकार सेट वस्तुओं और सेवाओं की वह श्रेणी है जिसे वह अपने अधिकारों और अवसरों का उपयोग करके प्राप्त कर सकता है। इसमें भूमि और पशु जैसी मूर्त संपत्ति और ज्ञान और कौशल जैसी अमूर्त संपत्ति दोनों शामिल हैं। सेन का सिद्धांत पारंपरिक खाद्य उपलब्धता में कमी (एफएडी) दृष्टिकोण से अलग है, जो खाद्य उत्पादन क्षमताओं पर केंद्रित है। सेन का सिद्धांत बताता है कि अकाल भोजन की कमी के बजाय अधिकार की विफलता के कारण होता है। इसका मतलब यह है कि लोगों के पास भुखमरी से बचने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं हो सकता है, भले ही भोजन उपलब्ध हो। सेन के सिद्धांत को विभिन्न विषयों पर लागू किया गया है, जिसमें नीति डिजाइन, लिंग, पर्यावरण और अंतर-सामाजिक वितरण शामिल हैं।

निष्कर्ष

अमर्त्य सेन एक अतुल्य अर्थशास्त्री तथा दार्शनिक है उनका अध्ययन सोचा केवल भारत अपितु संपूर्ण जगत के लिए काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है विशेषता अल्प विकसित तथा विकासशील राष्ट्रों के संदर्भ में आर्थिक तंत्र तथा गरीब रास्तों के संदर्भ में उनका शोध और मापनीय रहा है इसके अलावा अमर्त्य सेन का 'द्वितीय पंचवर्षीय योजना' (Second five-year plan) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अमर्त्य सेन ने भारतीय सांख्यिकी के जनक 'पी सी महालनोबिस' के द्वि-विभागीय कमियों को दूर करने के लिए 'प्रोफेसर के.एन.राज' के साथ मिलकर चार विभागों वाला एक वैज्ञानिक मॉडल प्रस्तुत किया था जिसे 'राज-सेन मॉडल' (Raj-Sen Model) के नाम से जाना जाता हैं। उनका मानना था कि शिक्षा, स्वास्थ्य और गरीबी उन्मूलन जैसे कार्यक्रमों को सरकार को अपनी देखरेख में करना चाहिए।

REFERENCES

1. गरीबी और अकाल (हिंदी अनुवाद)=डॉ.अमर्त्य सेन 2011

2. आर्थिक चिंतन का इतिहास= डॉ. महेश चंद्र चतुर्वेदी डॉ. मिथिलेश चंद्र चतुर्वेदी 2022

3. आर्थिक विचारों का इतिहास :डॉ जै सी पंत,डॉ ए के पंत 2007

4. आर्थिक विचारों का इतिहास :डॉ जै सी पंत,डॉ ए के पंत2009

5. History of economic thought = ML JHINGAN, M. GIRIJA., L. SHASIKALA 2011